१०. सबकी प्यारी गौ माता

समुद्र मंथन के समय बहुत से दिव्य रत्न निकले - उच्चैश्रवा घोड़ा,
ऐरावत हाथी, लक्ष्मी, कामधेनु गाय, वैद्य धन्वन्तरि, अमृत।

गाय में ३३ कोटि देवता रहते हैं। गाय की पूजा करने से सभी देवताओं की पूजा हो जाती है।

कोटि अर्थात् वर्ग -

८ वसु + १२ आदित्य + ११ रूद्र + २ अश्विनी कुमार = ३३

जब-जब पृथ्वी पर संकट आया, उसने गाय का रूप धारण कर भगवान की स्तुति कर उन्हें प्रसन्न किया। इसलिए पृथ्वी का एक नाम गो है।
गाय में पृथ्वी पूरी तरह व्यक्त होती है, इसलिए गोरक्षा वास्तव में पृथ्वी की रक्षा है। वैज्ञानिकों को इस दिशा में अध्ययन करना चाहिए।

पूजा-हवन में गाय का ही घी-दूध-गोबर-गोमूत्र काम में लिया जाता है।

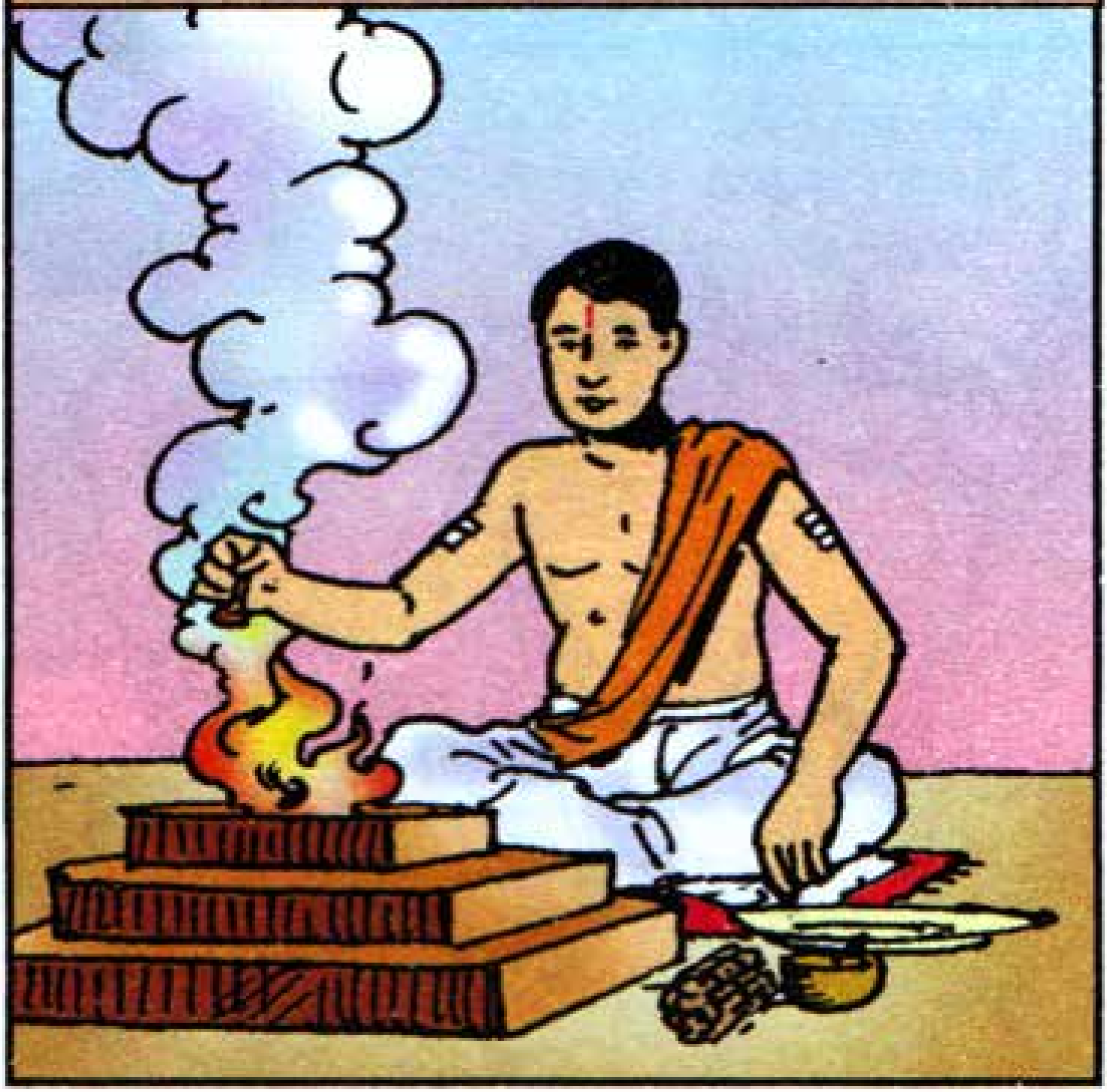

शिवजी का वाहन नंदी (साँड) है जबकि भैंसा तो यमराज का वाहन है।

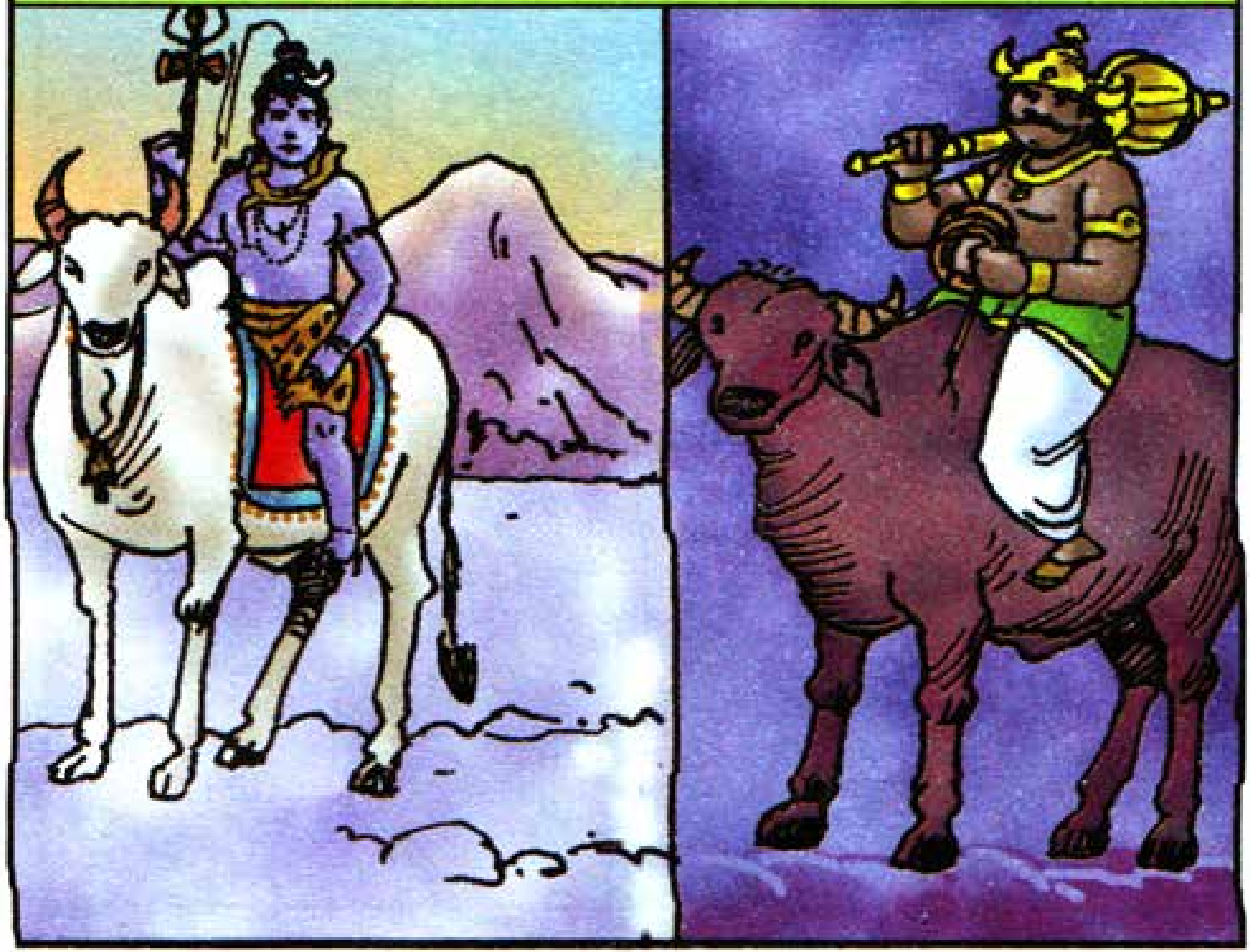

राजा दिलीप ने संतान प्राप्ति की कामना से नंदिनी नाम की गाय की सेवा की।

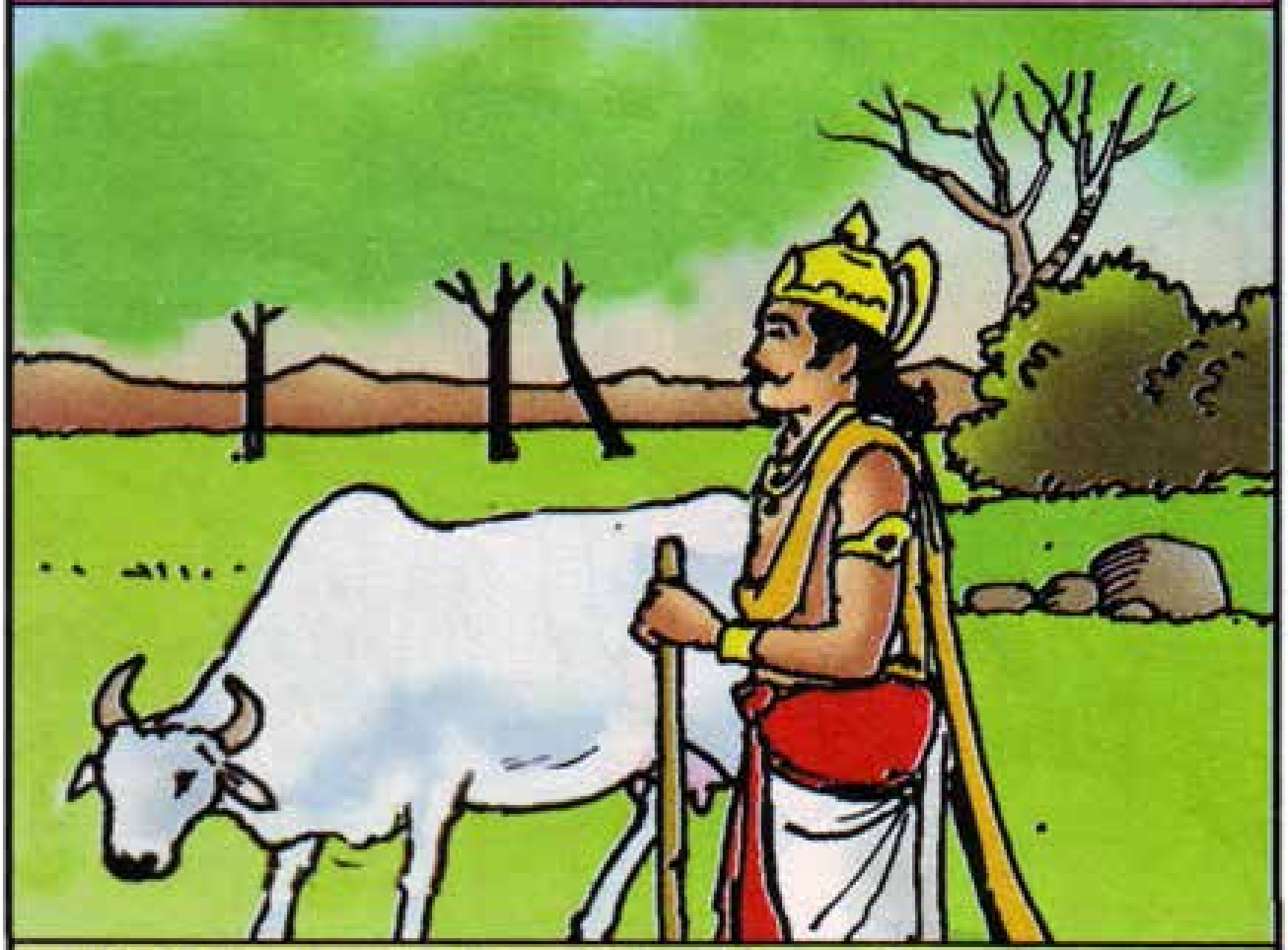

नंदिनी ने राजा की परीक्षा लेने का विचार किया और जैसे ही राजा का ध्यान दूसरी ओर गया अचानक....

...दुर्गा माता के शेर ने नंदिनी पर आक्रमण कर दिया।

हे दुर्गा माता के वाहन! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप नंदिनी माता को छोड़ मुझे खा लें।

राजन्! तुम पर राज्य का दायित्व है। एक गाय के लिए राजा का बलिदान होना अधर्म होगा। मेरे आशीर्वाद से तुम्हारे संतान होगी, अब जाओ।

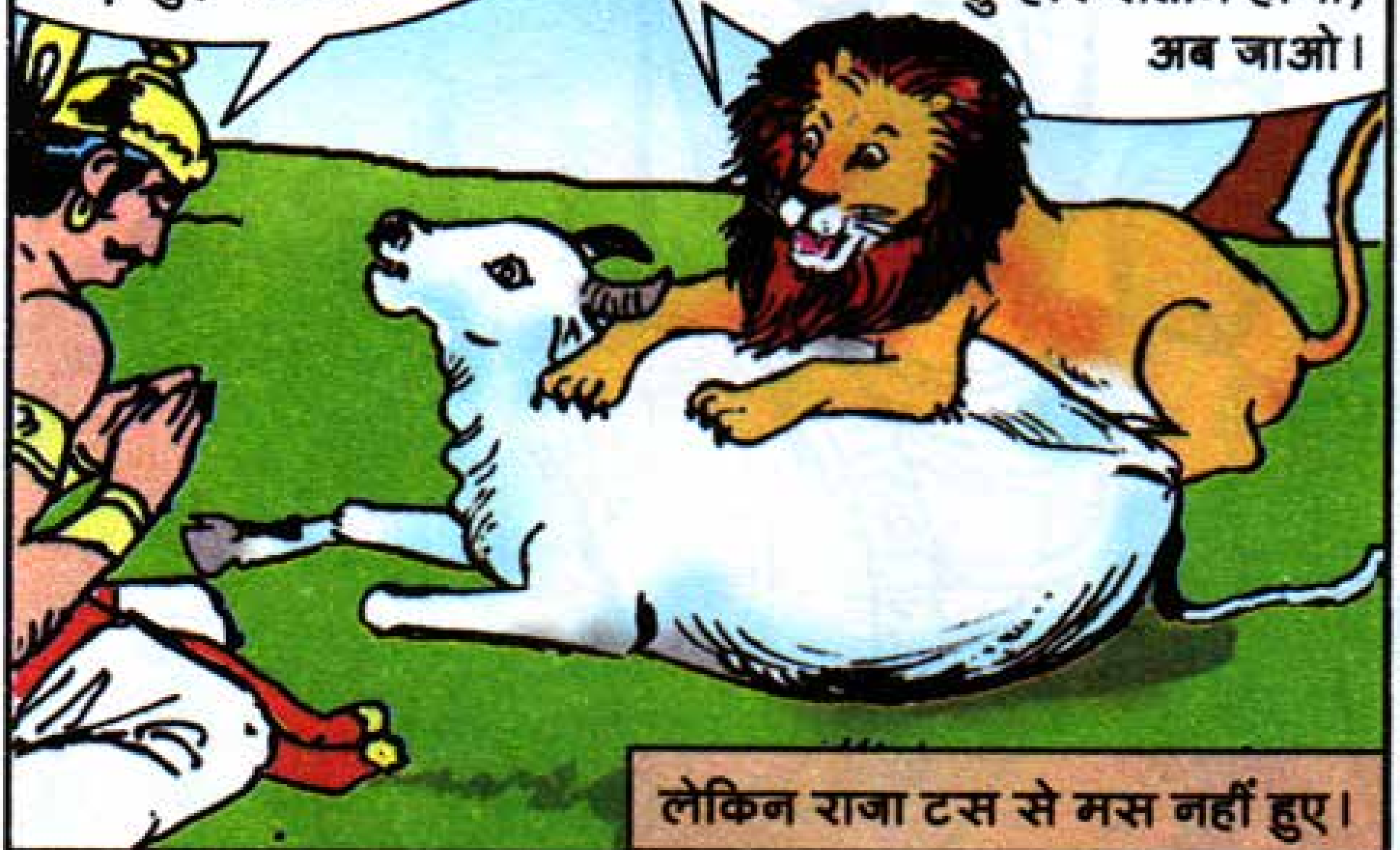

लेकिन राजा टस से मस नहीं हुए।

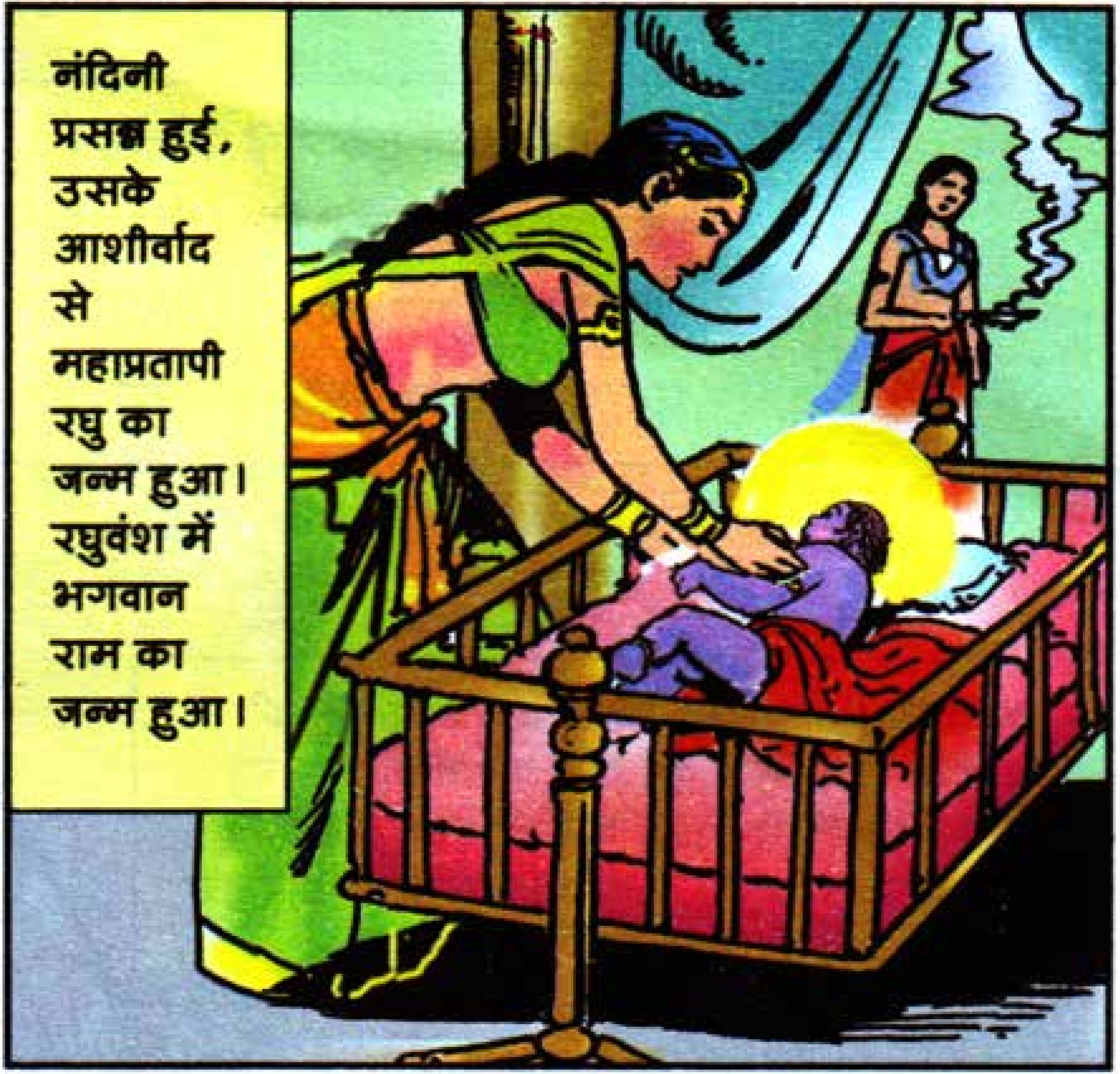

नंदिनी प्रसन्न हुई, उसके आशीर्वाद से महाप्रतापी रघु का जन्म हुआ। रघुवंश में भगवान राम का जन्म हुआ।

गो का पालन करने से भगवान कृष्ण का नाम गोपाल पड़ा।

बाँसुरी की धुन से गाय स्वस्थ व प्रसन्न रहती है और उसका दूध बढ़ जाता है। इस विज्ञान को श्रीकृष्ण ने प्रकट किया।

जैनों के पहले तीर्थंकर ऋषभदेव ने संसार को बैल से खेती करना सिखाया, इसीलिए बैल को ऋषभ भी कहा जाता है।

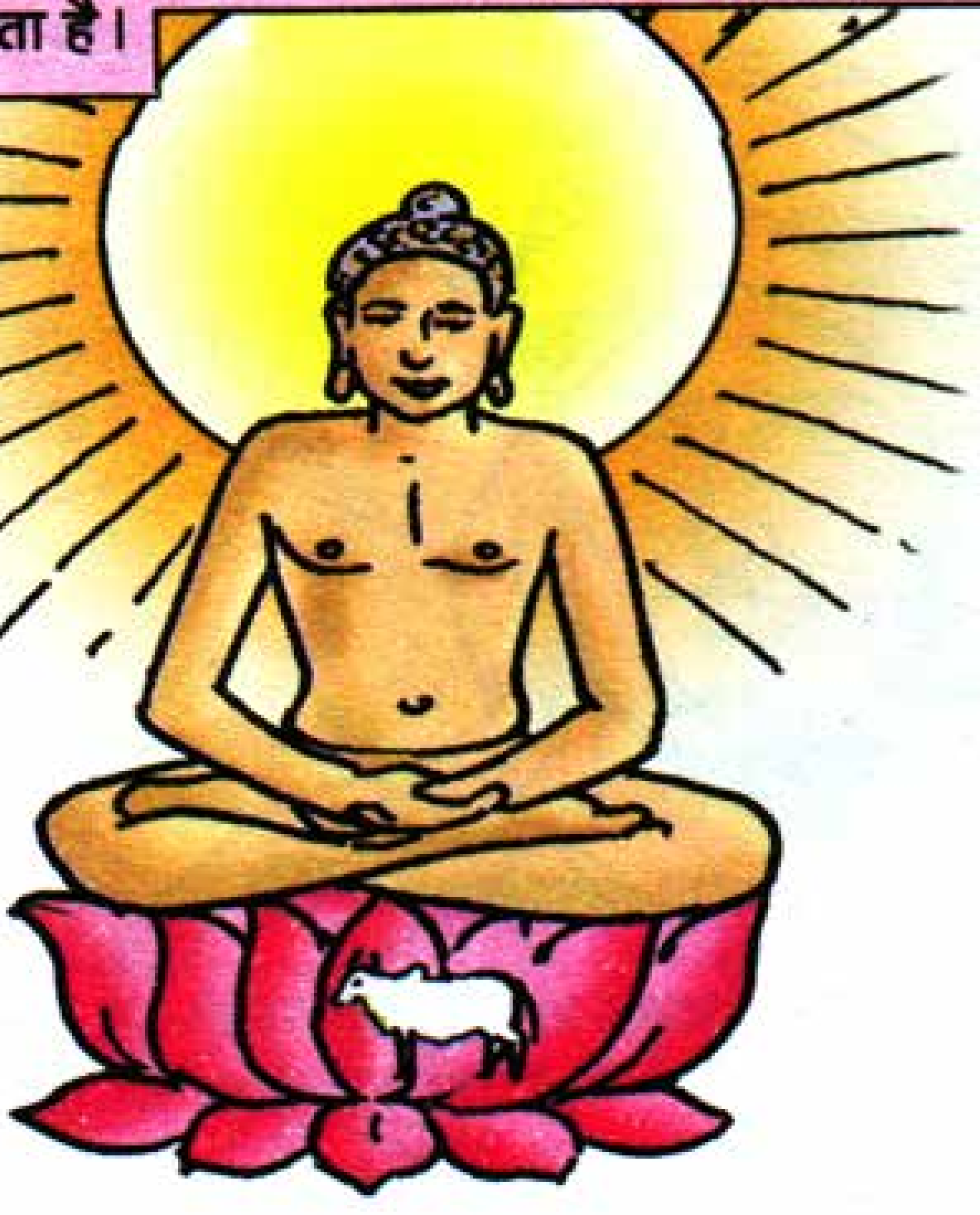

बुद्ध ने कहा
जैसे माता-पिता, भाई, परिवार के लोग हैं, वैसे ही गायें भी हमारी परम मित्र हैं और औषधियों को जन्म देनेवाली हैं।
ईसामसीह
एक बैल को मारना एक मनुष्य के कत्ल के समान है। (इसाइयाह ६६.३)

कुरान शरीफ में लिखा है - न तो उनका मांस और न ही उनका रक्त अल्लाह तक पहुँचता है; केवल तुम्हारी दया उस तक पहुँचती है। (२२.३७)

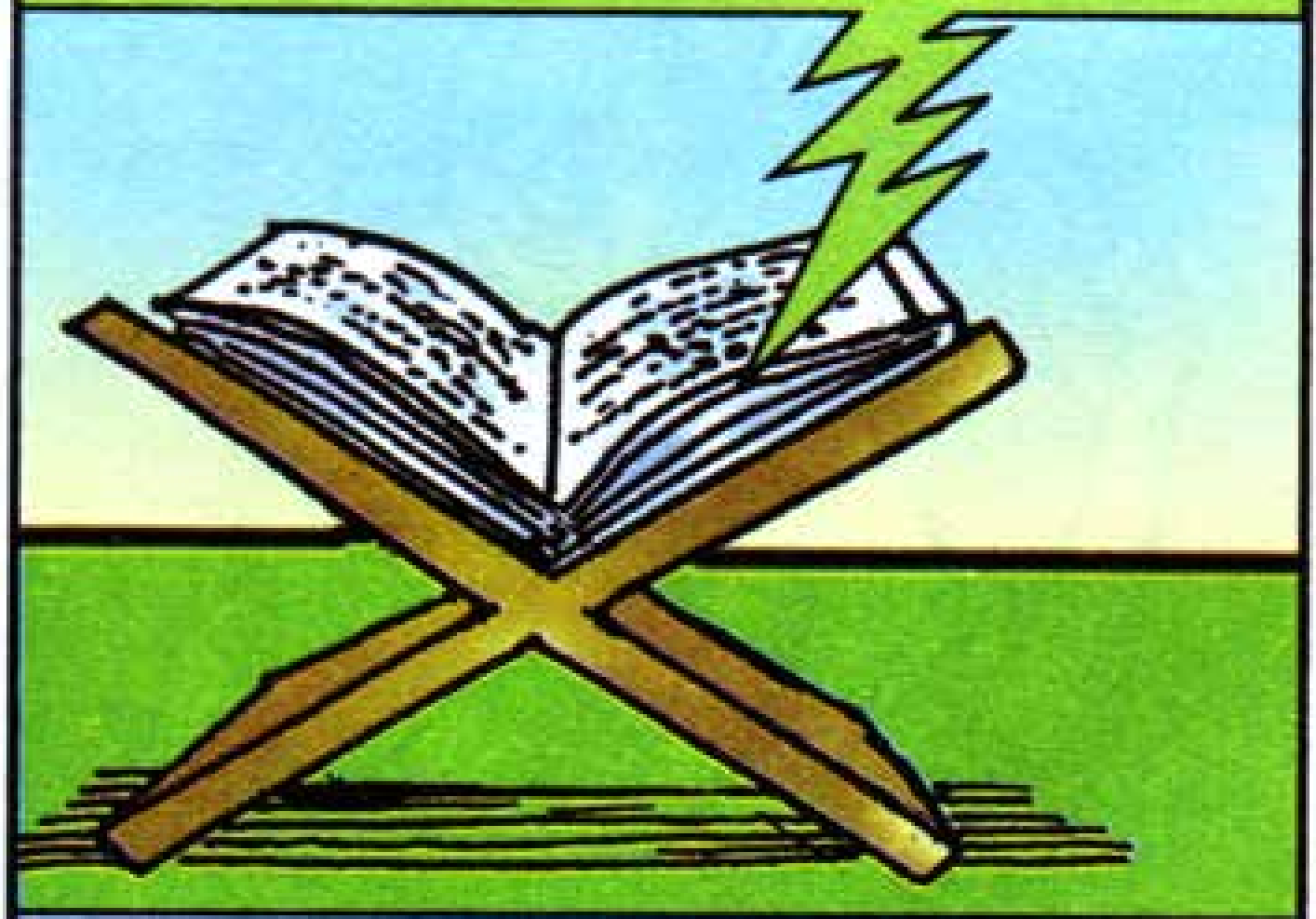

११वी सदी में इस्लामी अकादमी के संस्थापक अलगजाली ने लिखा गाय का मांस मर्ज (बीमारी), दूध सफा (स्वास्थ्यप्रद) और घी दवा है।

यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊं।
गऊ घातका दोष जग सिउ मिटाऊं।
यही आस पूरण करो तुम हमारी।
छूटे कष्ट गैयन मिटे खेद भारी।।
अर्थात् गुरू गोविन्दसिंह ने देश और धर्म की रक्षा के लिए सिख बने वीरों को आज्ञा दी - गौ हत्यारे मुगलों का नाश कर गौ-हत्या का दोष जग से खत्म करो। गायों का कष्ट मिटे और इस दुख का अंत हो, इस आशा को पूरी करो।

२५,७४० मनुष्य एक गाय के जन्मभर के दूधमात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं.....और इसके मांस से केवल ८० मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं।
स्वामी दयानंद सरस्वती की छोटी-सी पुस्तक 'गो-करुणानिधि' ने अंग्रेजों के दुष्प्रचार का मुँहतोड़ जवाब दिया।
बैल को पीटने से स्वामी रामकृष्ण परमहंस की पीठ पर बेंत के निशान पड़ गये।
आह !

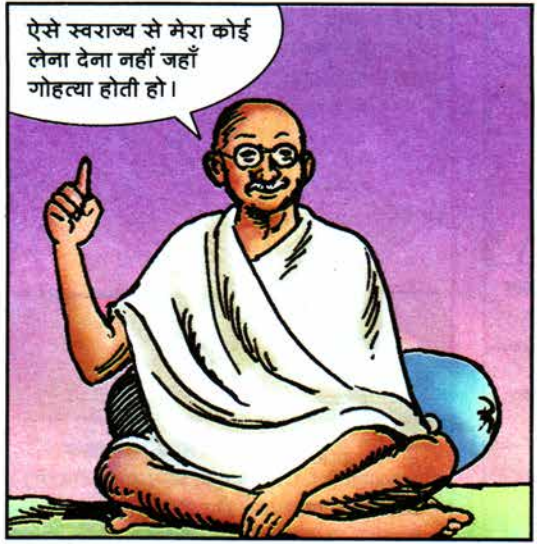
ऐसे स्वराज्य से मेरा कोई लेना देना नहीं जहाँ गोहत्या होती हो।

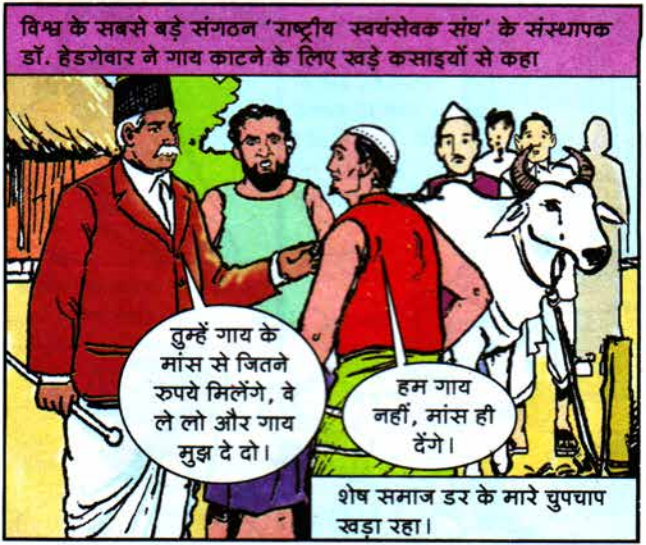
विश्व के सबसे बड़े संगठन 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने गाय काटने के लिए खड़े कसाइयों से कहा
तुम्हें गाय के मांस से जितने रुपये मिलेंगे, वे ले लो और गाय मुझ दे दो।
हम गाय नहीं, मांस ही देंगे।
शेष समाज डर के मारे चुपचाप खड़ा रहा।

डॉ. हेडगेवार की गाय के लिए बलिदान होने की तैयारी और उग्र रूप देख कसाई डर गये और रुपये ले गाय उन्हें दे दी।

बैलगाड़ी में जुती गाय को देख युवा श्रीराम शर्मा उसे खोल स्वयं बैलगाड़ी में जुत गये और १० कि.मी. दूर उसे छोड़कर आये।

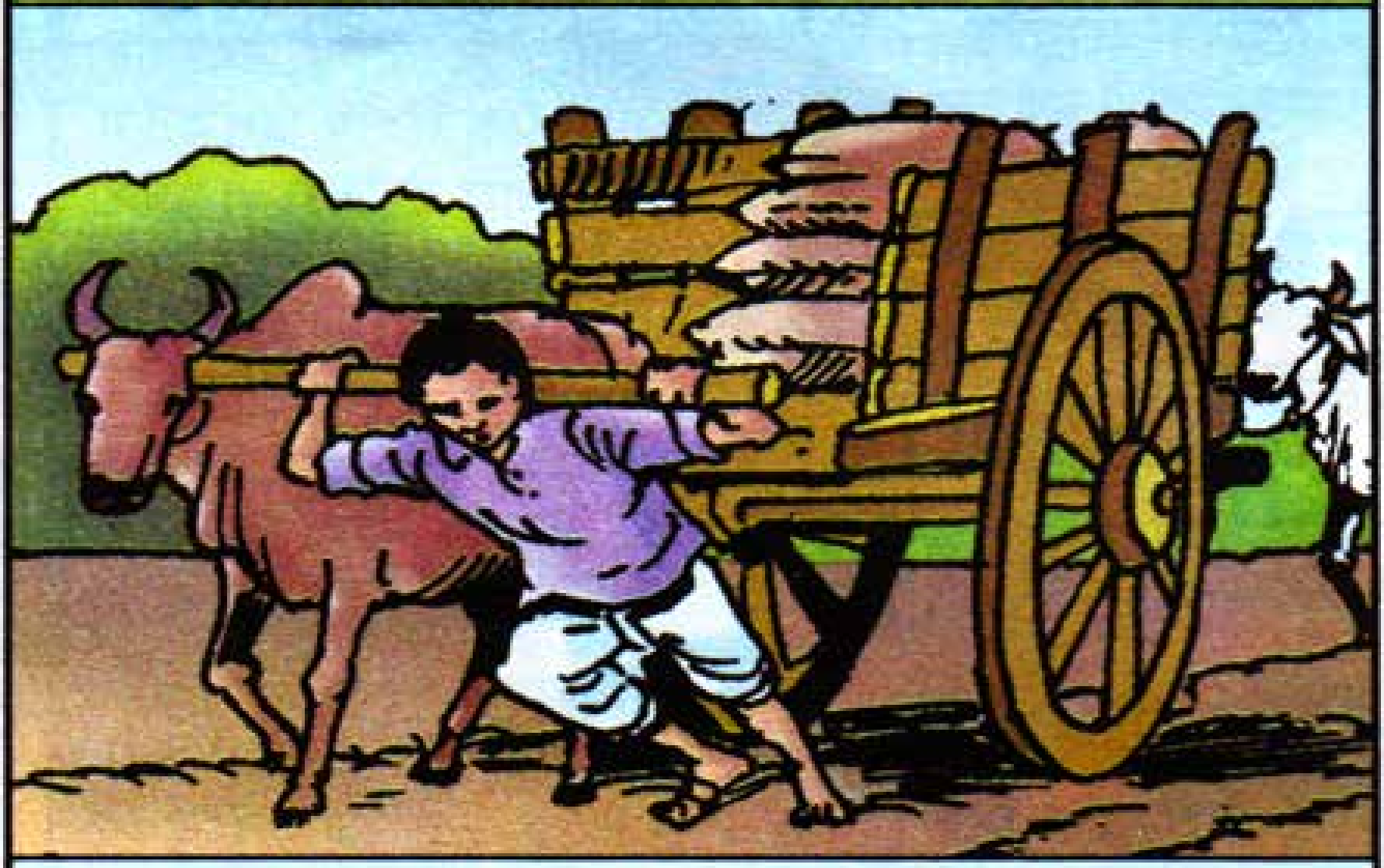

उन्होंने २४ वर्ष गायत्री मंत्र का जप करते हुए कठोर तपस्या की। इसमें इनका आहार था - गोबर से निकले जौ की रोटी और गाय की छाछ। उनसे लाखों युवकों ने समाज की सेवा की प्रेरणा ली।

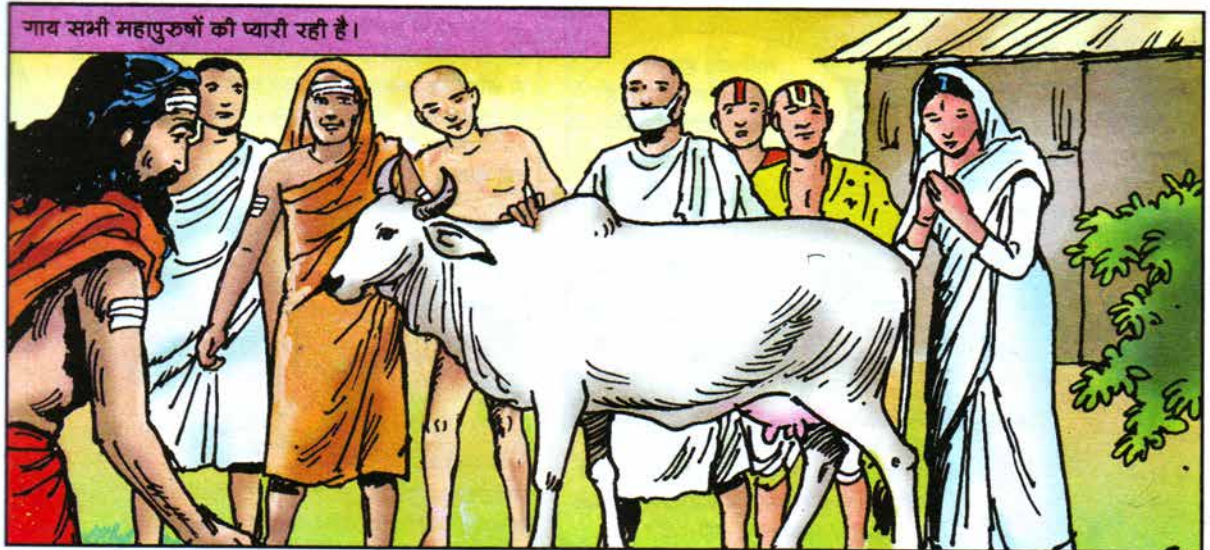
गाय सभी महापुरुषों की प्यारी रही है।

श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा (राजस्थान)

श्री गोधाम महातीर्थ आनंदवन-पथमेड़ा, त. सांचोर, जि. जालोर (राज.), दूर : ०२९७९-२५३१०२

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम श्रद्धेय स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज

- विश्व की सबसे बड़ी गोशाला
- सन् २००३ के भयंकर अकाल में ३ लाख गायों को आश्रय दिया।
- हर वर्ष १०,००० कमजोर गोवंश को स्वस्थ बनाकर घरों में रखवाना।